

दक्षिण एशिया और COP30: वैश्विक अनिश्चितता के दौर में जलवायु कार्रवाई का नेतृत्व

UPSC प्रासंगिकता

जीएस पेपर 3 (पर्यावरण और

अर्थशास्त्र): नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश, प्रौद्योगिकी प्रवाह, अनुकूलन वित्तपोषण और हरित अवसंरचना।

खबरों में क्यों

2015 के पेरिस समझौते के लगभग एक दशक बाद भी वैश्विक जलवायु संकट कम नहीं हुआ, बल्कि और गहरा हो गया है। दक्षिण एशिया विश्व के सबसे अधिक जलवायु-असुरक्षित क्षेत्रों में से एक बनकर उभरा है, जो तीव्र मानसूनी बाढ़, घातक लू (हीटवेव), भूस्खलन और हिमनदी आपदाओं जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। कमजोर पड़ते वैश्विक सहयोग, ढीली होती जलवायु प्रतिबद्धताओं और बढ़ते व्यापार संरक्षणवाद के बीच, अब पहले से कहीं अधिक क्षेत्रीय जलवायु नेतृत्व की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ब्राजील में होने वाले COP30 सम्मेलन से पूर्व, दक्षिण एशियाई देश एकीकृत रुख अपनाने की दिशा में प्रयासरत हैं, जिसमें सामूहिक कार्रवाई, अनुकूलन (Adaptation), शमन (Mitigation) और जलवायु वित्त के महत्व पर विशेष बल दिया जा रहा है।

पृष्ठभूमि

पेरिस समझौते जैसे अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के बावजूद, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव विश्व स्तर पर तेजी से बिगड़ रहे हैं। इसके प्रमुख कारण हैं:

- **कमजोर बहुपक्षीय सहयोग:** जलवायु मुद्दों पर वैश्विक एकजुटता तनाव में है।
- **शिथिल राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएँ:** कई देश अपनी जलवायु प्रतिज्ञाओं को घटा रहे हैं।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** व्यापार संरक्षणवाद और एकतरफा नीतियाँ, जैसे पेरिस समझौते से अमेरिका का हटना, वैश्विक जवाबदेही को कमजोर करती हैं।

लगभग 2 अरब आबादी वाला दक्षिण एशिया विविध जलवायु जोखिमों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है—

- **हिमालयी ग्लेशियर:** हिमनदी झीलों के फटने से बाढ़ (Glacial Lake Outburst Floods) का खतरा।
- **तटीय क्षेत्र:** समुद्र के बढ़ते जलस्तर से मालदीव और बांग्लादेश के अस्तित्व को खतरा।
- **शहरी एवं कृषि क्षेत्र:** लंबी लू, बाढ़ और सूखे से आजीविका और उत्पादकता पर गंभीर असर।

इस तात्कालिकता को ध्यान में रखते हुए, COP30 के लिए दक्षिण एशिया के विशेष दूत के नेतृत्व में भूटान, नेपाल, मालदीव, श्रीलंका और बांग्लादेश की सरकारों, नागरिक समाज समूहों और स्थानीय समुदायों के बीच क्षेत्रीय परामर्श आयोजित किए गए। इन संवादों में देश-विशिष्ट चिंताओं, साझा प्राथमिकताओं और सहयोग के अवसरों की पहचान की गई, जिससे दक्षिण एशिया को जलवायु वार्ताओं में सक्रिय नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की दिशा मिली।



दक्षिण एशिया की प्रमुख चिंताएँ और प्राथमिकताएँ

1. कमजोर कार्यान्वयन: 'अकिलीज़ हील' (Achilles' Heel)

सबसे बड़ी चुनौती जलवायु प्रतिबद्धताओं और उनके वास्तविक क्रियान्वयन के बीच की खाई है।

2015 के बाद से केवल 65 देशों ने ही उन्नत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) प्रस्तुत किए हैं। CEEW के एक अध्ययन के अनुसार, 203 वैश्विक जलवायु पहलों में से मात्र 5% ही अपने लक्ष्यों तक पहुँची हैं।

यह स्थिति वैश्विक निष्पादन घाटे को उजागर करती है, जो ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ दोनों को प्रभावित कर रही है। दक्षिण एशिया का संदेश स्पष्ट है—सिर्फ वादे नहीं, बल्कि परिणाम और जवाबदेही आवश्यक हैं।



2. जलवायु शासन को सशक्त बनाना

कार्यान्वयन के अंतर को भरने के लिए मजबूत शासन ढांचा आवश्यक है:

- राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर स्पष्ट समय-सीमाएँ, रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क और जवाबदेही प्रणालियाँ
- स्थानीय सरकारों, समुदायों और महिलाओं की भागीदारी वाला समावेशी शासन।
- BIMSTEC, BRICS, और G-20 जैसे मंचों के माध्यम से ज्ञान व प्रौद्योगिकी साझा करने की व्यवस्था।

क्षेत्रीय पहलें:

- भारत का आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI) — वैश्विक स्तर पर लचीले अवसंरचना मॉडल को प्रोत्साहन।
- नेपाल का सागरमाथा संवाद — पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र की कमजोरियों और क्षेत्रीय सहयोग पर केंद्रित।

3. अनुकूलन और शमन: समान प्राथमिकताएँ

दक्षिण एशिया इस बात पर बल देता है कि अनुकूलन (Adaptation) को शमन (Mitigation) के समान महत्व मिलना चाहिए।

- **शमन:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी।
- **अनुकूलन:** मौजूदा और भविष्य के जलवायु झटकों के प्रति लचीलापन (Resilience) विकसित करना।

जलवायु अनुमानों के अनुसार, 2100 तक अत्यधिक गर्म दिनों (35°C से अधिक) की संख्या दोगुनी हो सकती है, जिससे मानव स्वास्थ्य, कृषि और अर्थव्यवस्था पर लू का गहरा प्रभाव पड़ेगा।

देश-विशिष्ट चुनौतियाँ:

- **नेपाल:** हिमनदी झीलों के फटने से बाढ़ का खतरा।
- **मालदीव:** तटीय क्षरण और बढ़ता जलस्तर।
- **भारत:** शहरी स्वास्थ्य और उत्पादकता पर लू का असर।
- **श्रीलंका:** शुष्क भूमि का विस्तार और जल की कमी।

दक्षिण एशिया को उत्सर्जन में कमी और जलवायु-प्रतिरोधी विकास योजनाओं में संतुलन बनाए रखना होगा।

आवश्यक समर्थन

1. घरेलू क्षमता सुदृढ़ करना

प्रभावी जलवायु रणनीतियाँ लागू करने हेतु तकनीकी, संस्थागत और वित्तीय सहायता जरूरी है:

- स्थानीय संस्थानों का निर्माण और जलवायु विशेषज्ञों का प्रशिक्षण।
- जलवायु-प्रतिरोधी अवसंरचना का विकास।
- स्थानीय रूप से संचालित अनुकूलन (LLA) को बढ़ावा, जिसमें पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक नवाचार का समावेश हो।

वैश्विक तंत्रों जैसे *Global Goal on Adaptation (GGA)* को ऐसे लचीले संकेतक अपनाने चाहिए जो कम क्षमता वाले देशों को नुकसान पहुँचाए बिना उनकी प्रगति को मापें।



@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

2. वैश्विक प्रतिबद्धताओं में विश्वास बहाल करना

विकसित देशों को चाहिए कि वे अपनी विश्वसनीयता बहाल करें—

- वित्तीय व उत्सर्जन कटौती प्रतिबद्धताओं को पूर्ण करें।
- 1.5°C लक्ष्य के अनुरूप महत्वाकांक्षी NDCs अपनाएँ।
- भू-राजनीतिक तनावों के बीच भी निरंतर बहुपक्षीय नेतृत्व दिखाएँ।

3. न्यायसंगत और अनुमानित जलवायु वित्त

जलवायु वित्त होना चाहिए—

अनुमानित, पर्याप्त, न्यायसंगत, सुलभ और गैर-ऋणकारी। “\$1.3 ट्रिलियन के लिए बाकू से बेलेम रोडमैप” के अनुरूप स्पष्ट योगदान, वितरण समय-सीमा और जवाबदेही तंत्र तय किया जाए।

सबसे कम विकसित देशों (LDCs) को प्राथमिकता देते हुए *ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF)* और प्रस्तावित *दक्षिण एशियाई लचीलापन वित्त सुविधा* के माध्यम से वित्त उपलब्ध कराया जाए।

4. गैर-राज्य अभिकर्ताओं की भागीदारी

प्रभावी जलवायु कार्रवाई के लिए सिर्फ सरकारें ही नहीं, बल्कि अन्य हितधारक भी आवश्यक हैं:

- **उप-राष्ट्रीय सरकारें:** स्थानीय नीतियों को राष्ट्रीय लक्ष्यों से जोड़ना।
- **निजी क्षेत्र:** नवीकरणीय ऊर्जा और कार्बन-मुक्त आपूर्ति श्रृंखला में निवेश।
- **नागरिक समाज व युवा:** जागरूकता, नवाचार और निगरानी में भूमिका।
- **शिक्षा जगत:** साक्ष्य-आधारित नीति सुझाव और क्षेत्रीय जलवायु डेटा प्रणाली।

प्रौद्योगिकी और नवाचार

1. वित्त, प्रौद्योगिकी और नवाचार: परिवर्तन की कुंजी

दक्षिण एशिया अभी भी वैश्विक प्रौद्योगिकी प्रवाह से काफी हद तक अलग है, जिससे जलवायु कार्रवाई सीमित हो जाती है। वैश्विक पहलों में से एक-तिहाई से भी कम एशिया को लक्षित करती हैं। इसलिए, क्षेत्रीय नवाचार को केवल अलग-थलग परियोजनाओं के बजाय प्रणालीगत रूप से अपनाने की आवश्यकता है।

2. असुरक्षित क्षेत्रों के लिए वित्तीय उपकरण

- मिश्रित वित्त (Blended Finance) जो सार्वजनिक और निजी निवेश को जोड़ता है।
- *Debt-for-Nature Swaps* — ऋण में कमी के साथ पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा।
- *Carbon Markets* और *Green Bonds* जैसे बाजार-आधारित तंत्र।



3. डिजिटल और तकनीकी नवाचार

- **AI और बिग डेटा:** जलवायु पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ।
- **Digital Public Infrastructure (DPI):** डेटा-आधारित शासन के लिए।
- **Blockchain:** पारदर्शी वित्त और कार्बन क्रेडिट ट्रेकिंग।
- **Remote Sensing:** वनों, ग्लेशियरों और जल संसाधनों की सटीक निगरानी।

4. वितरण (Delivery): विश्वास की असली परीक्षा

- **पारस्परिक स्पष्टता:** जिम्मेदारियों और लक्ष्यों की सटीक परिभाषा।
- **पारस्परिक सहयोग:** साझा कमजोरियों व अवसरों की पहचान।
- **पारस्परिक कार्यान्वयन:** प्रतिबद्धताओं को ठोस कार्रवाई में बदलना।

आगे की राह

दक्षिण एशिया अब एक जलवायु नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रहा है, जो जवाबदेही, क्षेत्रीय सहयोग और विश्वसनीय बहुपक्षवाद की मांग कर रहा है। COP30 के लिए प्रमुख रणनीतियाँ होंगी:

- खोसले वादों के बजाय वास्तविक कार्यान्वयन।
- अनुकूलन और शमन में संतुलित दृष्टिकोण।
- समावेशी शासन और गैर-राज्य अभिकर्ताओं की भागीदारी।

- वित्त और प्रौद्योगिकी का एकीकृत उपयोग।
- क्षेत्रीय एकजुटता के साथ वैश्विक मंच पर एक सशक्त आवाज।

संदेश स्पष्ट है:

“अब और खोखले वादे नहीं — केवल ठोस और मापने योग्य कार्रवाई ही वैश्विक जलवायु शासन में विश्वास बहाल कर सकती हैं।”

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया वैश्विक जलवायु कार्रवाई के एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। बढ़ते जलवायु प्रभावों और कमजोर वैश्विक प्रतिबद्धताओं के इस दौर में क्षेत्र अब निष्क्रिय नहीं रह सकता। सुदृढ़ शासन, नवोन्मेषी वित्त और तकनीक के संयोजन तथा बहु-हितधारक जुड़ाव के माध्यम से, दक्षिण एशिया न केवल ग्लोबल साउथ बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण स्थापित कर सकता है। COP30 की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि देश वादों से आगे बढ़कर न्यायसंगत, मापने योग्य और लचीले जलवायु समाधान प्रस्तुत कर पाते हैं या नहीं।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा - अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. COP30 के संदर्भ में 'वितरण (Delivery) विश्वास की मुद्रा है' (Delivery is the currency of trust) इस वाक्यांश का निहितार्थ क्या है?

विकल्प:

- जलवायु कार्रवाई में केवल वित्तीय योगदान ही मायने रखता है।
 - वैश्विक विश्वसनीयता के लिए प्रतिबद्धताओं का मूर्त कार्यान्वयन (tangible implementation) महत्वपूर्ण है।
 - दक्षिण एशिया को अन्य महाद्वीपों को जलवायु वित्त प्रदान करना चाहिए।
 - यदि देश सहयोग का वचन देते हैं तो जलवायु समझौतों को लागू करने की आवश्यकता नहीं है।
- उत्तर:** B. वैश्विक विश्वसनीयता के लिए प्रतिबद्धताओं का मूर्त कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: "दक्षिण एशिया COP30 से पहले वैश्विक जलवायु शासन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस क्षेत्र की जलवायु संबंधी कमज़ोरियों, कार्रवाई की प्राथमिकताओं और जलवायु लचीलेपन को मज़बूत करने के लिए आवश्यक समर्थन पर चर्चा कीजिए। ठोस परिणाम प्राप्त करने में प्रौद्योगिकी, वित्त और बहु-हितधारक भागीदारी की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।" (250 शब्द)

